आरती श्री नर्मदा जी की (१)

ॐ जै जगदानन्दी, मैया जय आनन्द कन्दी ।
ब्रह्मा हरिहर शंकर रेवा, शिव हरिशंकर रूद्री पालन्ती ।
ॐ जय ।।१।।
देवी नारद शारद तुम, वरदायक अभिनव पदचण्डी ।
सुरनर मुनि जन सेवत, सुरनर मुनि शारद पदवन्दी ।
ॐ जय ।।२।।
देवी धूमक वाहन, राजत वीणा वादयन्ती ।
झूमकत झूमकत झूमकत, झननननझनन रमतीराराजन्ती ।
ॐ जय ।।३।।
देवी बाजत ताल मृदंगा, सुर मण्डल रमती ।
तोड़ीतान तोड़ीतान तोड़ीतान, तुरड़ड़ रमति सुरवन्ती ।
ॐ जय ।।४।।
देवी सफल भुवन पर, आप विराजत निशदिन आनंदी ।
गावत गंगाशंकर सेवत, रेवाशंकर तुम भव मेटन्ती ।
ॐ जय ।।५।।
मैया जी को कंचन थार, विराजत अगर कपूर बाती ।
अमम कण्ठ में विराजत, घाटनघाट कोटी रतन जोती ।
ॐ जय ।।६।।
मैया जी की आरती जो निशदिन पढ़ गावें,
कहत शिवानन्द स्वामी, मनवांछित पद पावें ।
ॐ जय ।।७।।

विवरण

सम्पूर्ण जग को आनन्द प्रदान करने वाली माता नर्मदा जी की जय हो । आप भगवान शंकर के अघमर्षण सूक्त की बारह आवृतियों का पालन करने वाली हो । हे देवी! आप ही नारद हो एवं उनकी वीणा भी तुम्हीं हो तथा हमें वर देनेवाली दुर्गा भी तुम्हीं हो ।

देवता मुनि एवं मनुष्य सभी आपके आश्रय में जाते हैं एवं आपके चरणों का स्पर्श कर अपने को पवित्र मानते हैं । आपका वाहन धूमक है । वीणा के बजने से वह आपके राज्य में झूम -झूम कर नृत्य करती है । हे देवी! आपके स्थान पर ताल एवं मृदंग बज रहे हैं एवं देवताओं की मण्डली झूम रही है तथा सुर में सुर मिलाकर गा रही है ।

हे नर्मदा देवी! सम्पूर्ण जगत पर आप ही आनंद के साथ अपनी कृपा करती हैं । गंगा को धारण करने वाले शंकर आपके गुणों को गाते हैं । आप हमें भवसागर पार कराने वाली माता हो । सोने की थाल में अगरबत्ती एवं कर्पूर जलाकर मैया की आरती हो रही है ।

आपका नाम हमारे हृदय में रहता है तथा हम आपके घाट - घाट पर आपके जय - जयकार की ज्योति जलाते हैं । यह नर्मदा देवी जी की आरती जो नित्य
स्म से पढ़कर गाता है, शिवानन्द स्वामी कह रहे हैं कि वह अपने मन के अनुसार फल भी पाता है ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.